International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2025; 7(1): 225-230
www.socialstudiesjournal.com
Received: 01-11-2024
Accepted: 03-12-2024

धीरज प्रताप मित्र
शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,#उत्तर प्रदेश, भारत

विशाल प्रताप मित्र
एम.ए., हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,#उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
धीरज प्रताप मित्र
शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,#उत्तर प्रदेश, भारत

शाबर मंत्र: उत्पत्ति, स्वरूप एवं लोकमान्यता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

धीरज प्रताप मित्र, विशाल प्रताप मित्र

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2025.v7.i1d.184

सारांश

शाबर मंत्र भारतीय धार्मिक एवं आध्यात्मिक परंपराओं में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं जो लोक प्रथाओं तथा तांत्रिक विश्वासों में गहराई से निहित हैं। संस्कृत के शास्त्रीय मंत्रों के स्वरूप के विपरीत ये मंत्र क्षेत्रीय भाषाओं में रचित होते हैं जिससे आम जनता हेतु इनकी पहुँच तथा समझ आसान हो जाती है। प्रस्तुत आलेख शाबर मंत्रों के ऐतिहासिक विकास, सामाजिक स्वीकृति एवं इनके सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करता है साथ ही संकट निवारण, सुरक्षा, उपचार तथा समृद्धि में इनकी भूमिका को उजागर करता है। इस आलेख में गुरु गोरखनाथ तथा नाथ संप्रदाय के योगदान पर भी प्रकाश डाला गया है जो शाबर मंत्रों के व्यापक धार्मिक परिदृश्य में एकीकृत होने की प्रक्रिया को दर्शाता है। यद्यपि कि शाबर मंत्रों के प्रभाव को लेकर विवाद भी बना हुआ है तथा इनके गूढ़ स्वभाव एवं वैज्ञानिक प्रमाणों की अनुपस्थिति के कारण भी इन्हें संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। कुछ आलोचकों का तर्क है कि इन मंत्रों की प्रभावशीलता मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक होती है जो विश्वास, आत्म-सुझाव आदि से प्रभावित होती है न कि किसी अलौकिक शक्ति से तथापि डिजिटल मीडिया के प्रसार के साथ ही आधुनिक समय में इनकी निरंतर प्रासंगिकता एवं लोकप्रियता में वृद्धि देखी गई है। यह आलेख शाबर मंत्रों के व्यावसायीकरण, इनके कानूनी एवं नैतिक पहलुओं तथा आधुनिक समाज में इनकी भूमिका पर भी विचार करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इन मंत्रों का अध्ययन यह समझने हेतु भी आवश्यक है कि परंपरागत आध्यात्मिक विश्वास किस प्रकार समकालीन समाज में संरक्षित एवं पुनः प्रतिष्ठित हो रहे हैं।

कुटशब्द: शाबर मंत्र, नाथ संप्रदाय, लोक परंपरा, तंत्र साधना, धार्मिक विश्वास, आध्यात्मिकता, समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तावना

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में तंत्र एवं मंत्र साधना का विशेष स्थान रहा है जिसमें शाबर मंत्र एक विशिष्ट लोकधर्मी शाखा के रूप में विकसित हुए हैं। ये मंत्र न केवल धार्मिक-तांत्रिक अनुष्ठानों का अभिन्न अंग रहे हैं अपितु जनसाधारण के लिए भी सहजता से उपलब्ध होने के कारण लोक संस्कृति में गहरी पैठ बनाने में सफल हुए हैं। शाबर मंत्रों की विशेषता इनकी सरलता, प्रभावकारिता तथा इनके सहज प्रयोग में निहित है जो इन्हें पारंपरिक संस्कृत मंत्रों से भिन्न बनाती है । शाबर मंत्रों की उत्पत्ति मुख्यतः नाथ संप्रदाय, गोरखनाथ परंपरा से जुड़ी मानी जाती है जो तंत्र-साधना की लोक-परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (Banerjee, 2018)। प्रस्तुत आलेख शाबर मंत्रों की उत्पत्ति, स्वरूप एवं इनकी लोकमान्यता की समाजशास्त्रीय पड़ताल करने का प्रयत्न है जिसमें इनकी ऐतिहासिक जड़ें, भाषाई स्वरूप, प्रभाव एवं समकालीन समाज में इनकी स्वीकृति पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शाबर मंत्रों को समझने हेतु यह आवश्यक है कि इन्हें पारंपरिक वेद-मंत्रों से भिन्न रूप में देखा जाए क्योंकि ये मंत्र लोक भाषाओं में रचे गए हैं तथा इनका उपयोग जनसामान्य द्वारा सहज रूप से किया जाता है। इन मंत्रों का विकास ऐसे समाजों में हुआ जहां संस्कृत के जटिल श्लोकों की बजाय साधारण बोलचाल की भाषा में ईश्वरीय शक्ति का आह्वान किया जाता रहा है। इन मंत्रों में विशिष्ट ध्वन्यात्मकता, प्रतीकात्मकता तथा तांत्रिक शक्ति निहित होती है जो साधक को तंत्र-सिद्धि की ओर उन्मुख करती है। लोकमूलक होने के कारण शाबर मंत्रों को विभिन्न सामाजिक वर्गों द्वारा अपनाया गया, उनमें भी विशेषतः वे लोग जो ब्राह्मणीय कर्मकांड से दूर थे एवं सहज साधना पद्धति को अपनाना चाहते थे (Urban, 2011)। यदि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो शाबर मंत्रों की प्रासंगिकता उन लोकधर्मी परंपराओं से जुड़ी है जो भारतीय समाज में शक्ति उपासना के विविध रूपों को प्रतिबिंबित करती हैं। शाबर मंत्रों की स्वीकृति न केवल ग्रामीण समाजों में अपितु शहरी क्षेत्रों में भी वर्तमान में भी बनी हुई है जहां आध्यात्मिकता तथा तंत्र-साधना को लेकर नवीन रुझान देखने को मिलते हैं। आज भी विभिन्न धार्मिक गुरु एवं तांत्रिक इन मंत्रों का उपयोग विभिन्न प्रकार की साधनाओं में करते हैं जिससे इनकी लोकप्रियता बनी हुई है । इस आलेख का उद्देश्य शाबर मंत्रों के सामाजिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करना है जिससे यह समझा जा सके कि किस प्रकार ये मंत्र भारतीय समाज की आध्यात्मिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं। इस आलेख हेतु द्वितीयक स्रोतों यतः ग्रंथों, शोध-पत्रों एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषणों का उपयोग किया गया साथ ही प्राथमिक रूप से भी कुछ ग्रामीण क्षेत्र के ओझाओं से मिलकर सम्बंधित जानकारी प्राप्त की गयी एवं मन्त्रों को जाना तथा सीखा गया।

इसके साथ ही समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर शाबर मंत्रों की संरचना तथा इनके प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस आलेख में तुलनात्मक विश्लेषण की विधि अपनाई गई है जिससे कि शाबर मंत्रों तथा अन्य तांत्रिक परंपराओं के बीच के अंतरों को स्पष्ट किया जा सके। इस शोध आलेख के निष्कर्ष भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में शाबर मंत्रों की समाजशास्त्रीय प्रासंगिकता को रेखांकित करने का कार्य करेंगे जिससे इनकी व्यापक समझ विकसित हो सके।

शाबर मंत्र की उत्पत्ति

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में तंत्र-साधना एवं लोकपरंपरा का गहरा संबंध रहा है, जिसमें शाबर मंत्र एक विशिष्ट लोकधर्मी शाखा के रूप में उभरकर सामने आए। शाबर मंत्रों की जड़ें भारतीय तांत्रिक परंपराओं में गहराई से समाई हुई हैं, जो वेदों और ब्राह्मणीय संस्कृत परंपराओं से अलग एक सरल और सहज धार्मिक साधना के रूप में विकसित हुईं (White, 2009)। ये मंत्र विशिष्ट रूप से लोकसंस्कृति में निहित हैं और सामान्य जनमानस के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं क्योंकि इनकी भाषा, उच्चारण और प्रयोग विधि सरल होती है। शाबर मंत्रों को आमतौर पर संस्कृत के क्लिष्ट श्लोकों के विपरीत क्षेत्रीय भाषाओं, बोलचाल की हिंदी, मराठी, अवधी, भोजपुरी एवं अन्य लोकभाषाओं में गढ़ा गया जिससे साधारण व्यक्ति भी इनका उपयोग कर सकेने में सक्षम होता है। इन मंत्रों की प्रभावशीलता एवं लोकप्रियता इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि ये सीधे-सीधे फल देने वाले माने जाते हैं और इनका संबंध विशेष रूप से तंत्र-साधना, सिद्धि तथा तांत्रिक अनुष्ठानों से जोड़ा जाता है। लोक परंपरा में इन्हें विशेष स्थान इसलिए प्राप्त हुआ क्योंकि ये उन वर्गों को भी आत्मसात करने योग्य थे जो ब्राह्मणीय अनुष्ठानों अथवा संस्कृत भाषा के जटिल कर्मकांडों से दूर थे। इन मन्त्रों के विषय में यह भी उल्लेखनीय है कि शाबर मंत्रों की विशेषता यह रही कि इनका उपयोग न केवल तांत्रिकों एवं सिद्धों द्वारा किया गया अपितु ग्रामीण समाज में भी इनका व्यापक प्रसार हुआ, विशेष रूप से चिकित्सा, सुरक्षा, संकट निवारण तथा अभिचारिक कर्मकांडों में। शाबर मंत्रों के विकास में गुरु गोरखनाथ तथा स्वयं नाथ संप्रदाय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गोरखनाथ, जिन्हें नाथ योगियों का प्रवर्तक माना जाता है ने भारतीय तंत्र-साधना को लोकपरंपरा के साथ जोड़ने का कार्य किया तथा इसी प्रक्रिया में शाबर मंत्रों का प्रसार हुआ, यद्यपि कि प्राचीन मान्यता है कि शाबर तंत्र स्वयं भगवान् शिव द्वारा उपदिष्ट हैं तथा इनका वर्तमान प्रचलित रूप गोरक्षनाथ द्वारा प्रवर्तित है यद्यपि कि इसका कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता क्योंकि गोरक्षनाथ द्वारा प्रणीत 'सिद्धसिद्धांतपद्धति' आदि में कहीं भी इसका उल्लेख नहीं मिलता किन्तु गोरखनाथ के काल-परिमाण का भी यथार्थ इतिवृत्त प्राप्त नहीं होता। यहाँ तक कि कृष्ण-गोरक्ष संवाद में इनको कृष्ण का समकालीन कहा गया है जिससे यह धरना भी बलवती होती है कि शंकराचार्य की तरह गोरक्षनाथ की गद्दी पर भी जो आसीन होते थे उनकी पदवी भी 'गोरक्षनाथ' कही जाती थी। अतः यह संभव है कि आदि गोरक्षनाथ के किसी उत्तराधिकारी गोरक्षपीठासीन द्वारा सिद्ध शाबर तंत्र का अद्यतन रूप में प्रवर्तन किया गया हो। इस प्रकार गोरखनाथ एवं उनके अनुयायियों ने ऐसी साधना पद्धति को अपनाया जो भिक्षु जीवन, योग, हठयोग तथा मंत्र-साधना पर आधारित थी। नाथ संप्रदाय ने ब्राह्मणवादी कर्मकांडों से परे एक ऐसी साधना को बढ़ावा दिया जो सहज, सरल एवं प्रभावकारी थी जिससे शाबर मंत्रों का जन्म तथा विकास हुआ। इस संप्रदाय के साधु समाज के विभिन्न वर्गों के साथ घुल-मिल गए साथ ही उन्होंने तंत्र साधना को केवल अभिजात्य या विशेष वर्ग तक सीमित न रखते हुए आम जनता तक पहुंचाने का कार्य किया। नाथ योगियों की यह परंपरा उन तांत्रिक एवं लोकधर्मी तत्वों से प्रभावित थी जो शंकर-संस्कृति से भिन्न एक स्वतंत्र मार्ग की ओर इंगित करती है (Daniélou, 1987)। लोकधर्मी तांत्रिक परंपराओं ने एक ऐसी आध्यात्मिक संस्कृति को जन्म दिया जिसमें शाबर मंत्रों की उत्पत्ति हुई एवं ये शाबर मंत्र नाथ संप्रदाय के साधुओं, अघोरियों, सिद्धों और गोरखपंथियों द्वारा प्रमुखतया प्रयुक्त किए जाने लगे। शाबर मंत्रों की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इनका उद्भव गैर-संस्कृत-लोकभाषा की परंपरा से हुआ जिसने इन्हें विशिष्ट बनाया। संस्कृत मंत्रों की तुलना में जो यज्ञ, हवन और वैदिक अनुष्ठानों से जुड़े होते थे शाबर मंत्रों की उत्पत्ति को देखें तो एक सहज लोकधर्मी प्रवृत्ति से हुई थी जो समाज के उन वर्गों तक पहुंच सकी जो पारंपरिक कर्मकांडीय धार्मिक अनुष्ठानों से दूर थे। इस सबके अतिरिक्त शाबर मंत्रों में ऐसे तांत्रिक तत्व शामिल किए गए जो भारतीय समाज की विविधता एवं लोकविश्वासों से सम्बद्ध तथा प्रभावित थे। कई विद्वानों का मानना है कि शाबर मंत्रों में आदिवासी, ग्रामीण एवं गैर-ब्राह्मण जातियों की आध्यात्मिक मान्यताओं की गहरी छाप दृष्टिगोचर होती है (Gupta, 2001)। ये मंत्र मुख्य रूप से सीधे प्रभाव डालने वाले होते हैं जिनमें देवताओं, भैरव, दुर्गा, हनुमान, नाथ योगियों एवं स्थानीय ग्राम-देवताओं आदि का आह्वान किया जाता है जिस कारण शाबर मंत्रों की एक अनूठी प्रवृत्ति यह भी प्रकट होती है कि इनमें जातिगत अथवा सामाजिक पदानुक्रम की बाध्यता नहीं रही साथ ही किसी भी जाति या समुदाय का व्यक्ति इनका अभ्यास कर सकता था। इस प्रकार शाबर मंत्रों की गैर-संस्कृत परंपरा एवं लोकधर्मी स्वरूप ने इन्हें व्यापक सामाजिक स्वीकृति दिलाई साथ ही इन्हें केवल तांत्रिक क्रियाओं तक सीमित न रखते हुए लोकजीवन का हिस्सा बना दिया। शाबर मंत्रों का क्षेत्रीय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भी अत्यंत रोचक एवं विस्तृत है जिन्हें देखें तो ऐतिहासिक रूप से ये मंत्र भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में पाए जाते हैं तथा इनका विकास क्षेत्र विशेष की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों पर निर्भर रहा है। उदाहरणार्थ उत्तर भारत में गोरखनाथ तथा नाथ संप्रदाय के प्रभाव के कारण शाबर मंत्रों का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ जबकि महाराष्ट्र-राजस्थान में भी लोकदेवताओं की साधना में इन मंत्रों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है (White, 2009)। यद्यपि कि दक्षिण भारत में संस्कृत परंपरा का अधिक प्रभाव था तथापि भी वहां के कुछ ग्रामीण समुदायों में शाबर मंत्रों की झलक मिलती है विशेषतः लोकदेवताओं की पूजा के अवसर पर। इसी प्रकार बंगाल तथा असम में भी तांत्रिक परंपराओं के प्रभाव से शाबर मंत्रों का प्रयोग तांत्रिक सिद्धियों एवं विशेष अनुष्ठानों में किया जाता रहा है। ऐतिहासिक रूप से शाबर मंत्रों का उल्लेख मध्यकालीन तांत्रिक ग्रंथों और नाथ साहित्य में भी दृष्टिगोचर होता है जो इनकी प्राचीनता एवं समृद्ध परंपरा का प्रमाण है। शाबर मंत्र मध्यकालीन भारत में अधिक लोकप्रिय हुए विशेषकर तब जब विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण लोगों का झुकाव तंत्र साधना एवं व्यक्तिगत सुरक्षा के उपायों की ओर बढ़ा। बाद के वर्षों में यथा मुगल काल एवं औपनिवेशिक काल में भी इनका उपयोग जारी रहा खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लोग पारंपरिक वैदिक विधियों से अधिक इन मंत्रों पर भरोसा करते रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शाबर मंत्रों की उत्पत्ति केवल एक धार्मिक प्रक्रिया नहीं थी अपितु यह भारतीय समाज की आध्यात्मिक संरचना में एक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में उभर कर आई। ये मंत्र तंत्र-साधना के लोकधर्मी स्वरूप को उजागर करते हैं तथा उन समुदायों को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करते हैं जो पारंपरिक वैदिक कर्मकांडों में स्थान नहीं पा सके। नाथ संप्रदाय, अघोर पंथ तथा इन जैसे अन्य लोकधर्मी साधु-संत परंपराओं ने शाबर मंत्रों को एक जीवंत परंपरा के रूप में स्थापित किया तथा इन्हें भारतीय तंत्र साधना का अभिन्न अंग बना दिया। वर्तमान समय में भले ही आधुनिक समाज में विज्ञान एवं तर्कवाद का प्रभाव बढ़ा हो किन्तु लोकमान्यता तथा आध्यात्मिक आस्था के चलते शाबर मंत्रों का प्रभाव समाज में विद्यमान ही है। इनकी उत्पत्ति का ऐतिहासिक-क्षेत्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय समाज में धर्म एवं आध्यात्मिकता के विकास में लोकसंस्कृति तथा तांत्रिक परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसने भारतीय समाज को एक विशिष्ट धार्मिक और आध्यात्मिक पहचान प्रदान की।

शाबर मंत्रों का स्वरूप एवं विशेषताएँ

शाबर मंत्र भारतीय तांत्रिक परंपरा के लोकधर्मी स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं जो संस्कृत के जटिल वैदिक मंत्रों से भिन्न होते हैं जो मुख्य रूप से क्षेत्रीय भाषाओं, बोलचाल की शैली तथा आमजन हेतु सहज प्रयोग योग्य होने के कारण अद्वितीय हैं। शाबर मंत्रों की भाषा एवं संरचनागत स्वरूप की बात करें तो ये संस्कृत के स्थान पर स्थानीय भाषाओं यथा अवधी, भोजपुरी, मराठी, राजस्थानी, ब्रज तथा अन्य क्षेत्रीय बोलियों में गढ़े गए हैं जिनके निर्माण में सरल-सहज शब्दों का उपयोग किया गया है जिससे कि आम जन भी इन्हें सहजता से ग्रहण कर सके।

इनमें अक्सर ग्रामीण जीवन, प्राकृतिक तत्वों, लोक-देवताओं आदि का उल्लेख होता है जिससे ये मंत्र समाज के व्यापक तबके के लिए आकर्षक तथा उपयोगी सिद्ध होते हैं। जहां संस्कृत के वैदिक मंत्रों की जटिल संरचना के साथ ही वेदांग सम्मत उच्चारण नियम होते हैं वहीं शाबर मंत्रों की भाषा सहज, तात्कालिक प्रभावशाली एवं विशुद्ध लोकपरंपरा से ओत-प्रोत होती है। इस प्रकार शाबर मंत्रों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी सरलता एवं प्रभावकारिता है। वैदिक मंत्रों की तुलना में शाबर मंत्रों का उच्चारण करने हेतु किसी विशेष प्रशिक्षण अथवा दीक्षा की आवश्यकता नहीं होती। इनमें शक्ति एवं सिद्धि प्राप्त करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल होती है जिस कारण ये ग्रामीण और अशिक्षित जनसमुदाय में भी अत्यधिक लोकप्रिय हुए। उदाहरणार्थ हनुमान जी का रक्षा मंत्र शाबर एवं संस्कृत में निम्न लिखित हैं-

शाबर

ओम गुरुजी को आदेश गुरजी को प्रणाम,
धरती माता धरती पिता,
धरती धरे ना धीरबाजे श्रींगी बाजे तुरतुरि आया
गोरखनाथमीन का पुत् मुंज का छड़ा लोहे का कड़ा
हमारी पीठ पीछे यति हनुमंत खड़ा

संस्कृत

ॐ ह्रीं यं ह्रीं रामदूताय, रिपुपुरीदाहनाय, अक्षकुक्षिविदारणाय, अपरिमित बल पराक्रमाय, रावण गिरि वज्रायुधाय ह्रीं स्वाहा

फोटो: एक शाबर मंत्र साधक

शाबर मंत्रों को 'सिद्ध मंत्र' भी कहा जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इनकी शक्ति पहले से ही जागृत होती है तथा इनका प्रयोग करने वाला व्यक्ति तुरंत प्रभाव अनुभव कर सकता है। इनके प्रयोग से तत्काल लाभ की अवधारणा जुड़ी हुई है जिससे इन्हें चिकित्सा, संकट निवारण, आत्मरक्षा, भूत-प्रेत बाधा मुक्ति एवं अभिचारिक प्रयोगों में विशेष स्थान प्राप्त हुआ। इनकी प्रभावकारिता के पीछे लोक विश्वास तथा तांत्रिक परंपराओं की शक्ति भी निहित होती है जो इसे अत्यंत प्रभावशाली बनाती है। शाबर मंत्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता इनका प्रयोग एवं विधि है जिनका प्रयोग साधारण व्यक्ति भी कर सकता है बशर्ते उसे सही उच्चारण तथा प्रचलित प्रयोग विधि का ज्ञान हो। इनमें तांत्रिक प्रक्रिया की जटिलता नहीं होती अपितु इन्हें अधिकतर सीधे उच्चारण अथवा किसी विशेष अनुष्ठान के माध्यम से प्रभावी बनाया जाता है। शाबर मंत्रों को तांत्रिक अनुष्ठानों में सुरक्षा, आत्मरक्षा, संकट निवारण, शत्रु नाश, प्रेम-संबंधी समस्याओं तथा मनोकामना पूर्ति हेतु उपयोग किया जाता है (White, 2009)। इनमें से कई मंत्र विशेष अवसरों, ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति, तांत्रिक नियमों आदि के अनुरूप प्रयोग किए जाते हैं जिससे इनकी सिद्धि सुनिश्चित की जाती है। शाबर मंत्रों की एक विशिष्ट विधि यह भी रही है कि इन्हें कई बार जपने के बजाय एक बार उच्चारण करने मात्र से भी प्रभावी माना जाता रहा है जबकि वैदिक-तांत्रिक मंत्रों में हजारों जप एवं दीर्घकालिक अनुष्ठानों की आवश्यकता होती है। शाबर मंत्रों का शक्ति-आराधना से संबंध भी अत्यंत गहरा है जिनमें शक्ति, भैरव, हनुमान, दुर्गा, काली, दत्तात्रेय एवं अन्य लोकदेवताओं का आह्वान किया जाता है।

मां काली का आप्तकाम शाबर मंत्र

ॐ काली काली महाकाली,
इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली,
कूचे पान बजावे ताली,
चल काली, कलकत्ते वाली।
आल बाँधू-ताल बाँधू,
और बाँधू तलैया।
शिव जी का मंदिर बाँधू,
हनुमान जी की दुहैया।
शब्द साँचा, पिण्ड काँचा,
फुरे मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

मां काली का संस्कृत मंत्र

नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।
नमः आं आं क्रों क्रों फट स्वाहा कालिका हूं।
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

इन मन्त्रों के स्वरूप के अतिरिक्त जहां वैदिक परंपरा में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु यज्ञ-हवन की आवश्यकता होती है वहीं शाबर मंत्रों में शक्ति-आराधना का सीधा संबंध साधक तथा मंत्र के मध्य के विश्वास से होता है। यह लोकमंत्रों की वह विशेषता है जो इन्हें अत्यधिक प्रभावशाली बनाती है। इनमें गुरुओं एवं सिद्धों की शक्ति को भी विशेष महत्व दिया जाता है तथा यह माना जाता है कि गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्रों की सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है। नाथ संप्रदाय के योगियों एवं गोरखनाथ के अनुयायियों ने इन मंत्रों में विशेष शक्ति डाली जिससे ये अधिक प्रभावी हो गए इसलिए इन मंत्रों में अक्सर "गुरु गोरखनाथ" या अन्य सिद्ध पुरुषों का आह्वान किया जाता है, जिससे इनकी शक्ति बढ़ती है। उदाहरणार्थ-
मोक्ष प्राप्ति हेतु बाबा गोरखनाथ का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को आदि-नाथ ॐ स्वरुप, उदय-नाथ उमा-महि-रुप।
जल-रुपी ब्रह्मा सत-नाथ, रवि-रुप विष्णु सन्तोष- नाथ।
हस्ती-रुप गनेश भनीजे, ताकु कन्थड- नाथ कही जै।
माया-रुपी मछिन्दर - नाथ, चन्द- रुप चौरङ्गी-नाथ।
शेष-रुप अचम्भे-नाथ, वायु- रुपी गुरु गोरख नाथ।
घट-घट व्यापक घट का राव, अमी महा-रस स्रवती खाव।
ॐ नमो नव-नाथ- गण, चौरासी गोमेश।
आदि-नाथ आदि-पुरुष, शिव गोरख आदेश।
ॐ श्री नव-नाथाय नमः।।

स्वयं की रक्षा हेतु गुरु गोरखनाथ रक्षा शाबर मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को आदि-नाथ ॐ स्वरुप, उदय-नाथ उमा-महि-रुप।
जल-रुपी ब्रह्मा सत-नाथ, रवि-रुप विष्णु सन्तोष- नाथ।
हस्ती-रुप गनेश भनीजे, ताकु कन्थड- नाथ कही जै।

माया-रुपी मछिन्दर - नाथ, चन्द- रुप चौरङ्गी-नाथ।
शेष-रुप अचम्भे-नाथ, वायु- रुपी गुरु गोरख नाथ।
घट-घट व्यापक घट का राव, अमी महा-रस स्रवती खाव।
ॐ नमो नव-नाथ- गण, चौरासी गोमेश।
आदि-नाथ आदि-पुरुष, शिव गोरख आदेश।
ॐ श्री नव-नाथाय नमः।।

शाबर मंत्रों तथा संस्कृत मंत्रों की तुलना करें तो इन दोनों में मौलिक भिन्नताएँ दिखाई देती हैं यथा संस्कृत मंत्र वैदिक और तांत्रिक परंपराओं से जुड़े होते हैं जिनमें शुद्ध उच्चारण, अनुष्ठान एवं दीक्षा की आवश्यकता होती है साथ ही इन्हें पूर्ण प्रभावशाली बनाने हेतु लयबद्ध उच्चारण, ब्राह्मण पुरोहितों का मार्गदर्शन और विस्तृत विधानों का पालन आवश्यक होता है। इसके विपरीत शाबर मंत्रों की रचना ऐसी होती है कि आम जनता भी इन्हें समझ कर प्रयोग कर सकती है। संस्कृत मंत्रों की संरचना में देवताओं का स्तवन एवं विस्तृत काव्यात्मक स्वरूप होता है जबकि शाबर मंत्र सीधे प्रभाव डालने वाले होते हैं तथा इनमें साधारण भाषा का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत मंत्रों में गूढ़ दार्शनिक अर्थ होते हैं जबकि इसके विपरीत शाबर मंत्रों का मुख्य उद्देश्य तात्कालिक एवं व्यावहारिक लाभ प्राप्त करना होता है। एक अन्य महत्वपूर्ण अंतर यह है कि संस्कृत मंत्रों का प्रभाव व्यापक तथा सार्वभौमिक होता है जबकि शाबर मंत्र अधिकतर स्थानीय और सांस्कृतिक संदर्भों में ही प्रभावी होते हैं। शाबर मंत्रों का स्वरूप और उनकी विशेषताएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में लोकधर्मी तथा तांत्रिक धारा ने आम जनमानस हेतु एक सहज और प्रभावशाली प्रणाली विकसित की। इन मंत्रों की भाषा, सरलता, प्रभावकारिता, प्रयोग विधि, शक्ति-आराधना से संबंध तथा संस्कृत मंत्रों से तुलना यह स्पष्ट करती है कि शाबर मंत्र भारतीय तंत्र-साधना की एक अनूठी विरासत हैं। इनके माध्यम से लोक-संस्कृति एवं आध्यात्मिकता का ऐसा संगम हुआ जिसने आम लोगों को भी आध्यात्मिक-तांत्रिक परंपरा में स्थान दिलाया। वर्तमान समय में भी शाबर मंत्रों का प्रयोग कई धार्मिक-तांत्रिक अनुष्ठानों में किया जाता है जो यह प्रमाणित करता है कि इनकी शक्ति और प्रभाव अभी भी लोकमानस में जीवंत है।

शाबर मंत्र तथा लोकमान्यता

शाबर मंत्र भारतीय लोकसंस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जो व्यापक जनमानस द्वारा स्वीकृत रहे हैं। इन मंत्रों की स्वीकृति का मुख्य कारण इनकी सहजता, प्रभावकारिता तथा आम लोगों की स्थानीय धार्मिक-सांस्कृतिक धारणाओं के अनुरूप होना है। लोकसंस्कृति में शाबर मंत्रों की स्वीकृति का आधार यह है कि ये संस्कृत के जटिल मंत्रों की तुलना में सरल-शीघ्र प्रभावी होते हैं। लोकमानस में शाबर मंत्रों को विशेष रूप से संकट निवारण, सुरक्षा एवं उपचार आदि हेतु प्रयोग किया जाता रहा है। ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही समाजों में यह मान्यता प्रचलित है कि इन मंत्रों की शक्ति किसी विशेष साधना या तांत्रिक प्रक्रिया से नहीं अपितु गुरु-संप्रदाय की दीक्षा तथा मंत्रों में निहित शक्ति से उत्पन्न होती है। यही कारण है कि सामान्य ग्रामीण व्यक्ति भी इन मंत्रों का उपयोग करता है और इन्हें प्रभावशाली मानता है। शाबर मंत्रों का एक प्रमुख प्रयोग चिकित्सा, सुरक्षा और संकटमोचन के रूप में देखा जाता रहा है। भारतीय समाज में शाबर मंत्रों का उपयोग कई प्रकार की व्याधियों के उपचार में किया जाता रहा है। विशेषतः गांवों में जहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ सीमित थीं वहाँ शाबर मंत्रों का प्रयोग झाड़-फूंक, ओझा-गुनी द्वारा स्थानीय उपचार पद्धतियों में किया जाता रहा है। यह देखा गया है कि आम लोग सर्पदंश, बुखार, मानसिक व्याधियों, अन्य शारीरिक कष्टों आदि के निवारण हेतु शाबर मंत्रों का सहारा लेते हैं। उदाहरणार्थ-

बुखार दूर करने का शाबर मन्त्र

ॐ भैरव भूतनाये विकरालकाये अग्निवर्णाधाये सर्व ज्वर बन्ध मोघय त्र्यम्बकेति हूं।

नेत्र शमन का शाबर मंत्र

उत्तर दिशि कूल कामाख्या सुन योगी की बाद्ध इस्माइल योगी की
दुह बेटी एक के सिर चूल्हा दूसरी काटे माड़ी फूला लोना चमारी
दुहाई शब्द सांचा फूली काछा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इसके अलावा, इन मंत्रों का प्रयोग भूत-प्रेत बाधा, बुरी नजर, अदृश्य शक्तियों आदि से सुरक्षा हेतु भी किया जाता है। जनमानस में यह विश्वास है कि शाबर मंत्रों में सिद्ध तांत्रिक शक्ति होती है जो व्यक्ति को नकारात्मक ऊर्जाओं से बचाती है (Banerjee, 2018)। इन्हें संकटमोचन के लिए भी प्रभावी माना जाता है यथा शत्रुओं से सुरक्षा, मुकदमों में विजय, व्यवसायिक उन्नति, प्रेम संबंधों की समस्याओं का समाधान तथा गृहक्लेश से मुक्ति हेतु इनका प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ –

प्रेमिका वशीकरण मन्त्र

सकोरे में, ताबे में, शीशे में, पानी में, सीपी में कीड़ा मरे वश में हरे।
पारबती के वचन न टरें। अमुक को वश में करे नहीं तो महादेव के त्रिशूल की चोट न खा लें।
जय शंकर भगवान सत् गुरु सत कबीर।

शाबर मंत्रों और आस्था का धार्मिक-सांस्कृतिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज में आस्था एवं धार्मिक विश्वासों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है क्योंकि यह लोकमान्यता में धारणा प्रचलित है कि शाबर मंत्रों को सिद्ध पुरुषों, तांत्रिकों और विशेष रूप से नाथ संप्रदाय के गुरु गोरखनाथ तथा उनके शिष्यों द्वारा प्रतिष्ठित किया गया था इस हेतु इन मंत्रों को अत्यधिक प्रभावशाली माना जाता है। शाबर मंत्रों में देवी-देवताओं के आह्वान के साथ-साथ गुरु परंपरा की शक्ति भी निहित होती है। इन मंत्रों में प्रमुख रूप से भैरव, दुर्गा, हनुमान, दत्तात्रेय, और अन्य लोक-देवताओं का आह्वान किया जाता है जिससे ये विशिष्ट धार्मिक महत्व प्राप्त कर लेते हैं (Mallinson, 2019)। इस सबके अलावा विभिन्न धार्मिक त्योहारों एवं अनुष्ठानों में भी इन मंत्रों का प्रयोग किया जाता है जिससे इनकी धार्मिक स्वीकृति और बढ़ जाती है। शाबर मंत्रों की स्वीकार्यता समाज के विभिन्न वर्गों में अलग-अलग रूप में देखने को मिलती है। ये मंत्र विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े वर्गों में अधिक लोकप्रिय हैं क्योंकि इन्हें किसी विशेष अनुष्ठान या संस्कार की आवश्यकता नहीं होती । निम्नवर्गीय समुदायों में भी जो वैदिक परंपराओं तथा ब्राह्मणीय अनुष्ठानों में भाग लेने से वंचित रहते थे उनके लिए शाबर मंत्र एक सहज साधन के रूप में उभरे। इनके माध्यम से वे अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते थे तथा धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं में भागीदारी कर सकते थे। इसके अलावा महिलाओं में भी इन मंत्रों की स्वीकृति अधिक देखने को मिलती है क्योंकि इनका प्रयोग घरेलू जीवन से जुड़ी समस्याओं यथा संतान प्राप्ति, वैवाहिक जीवन की समस्याओं और आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है (Gupta, 2001)। उदाहरणार्थ-
पति वशीकरण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का सिन्दूर कीमिया सिंदूर नाम तेरी पती कामाख्या सिर पर तेरी उत्पत्ती सिंदूर पढ़ि अमुकी लगावे बिन्दी लगावे हो वश अमुक होके रहे निर्बुद्धि महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति न वशी हो तो कामरू कामाख्या की दुहाई आदेश घड़ी दासी चड़ी का अमुक का मन लाओ निकाल नहीं तो महादेव पिता का वाम पाद जाय लागे।

व्यापारियों और किसानों में भी इन मंत्रों की स्वीकृति पाई जाती है क्योंकि वे इन्हें व्यवसायिक उन्नति एवं फसलों की सुरक्षा हेतु उपयोग करते हैं। यद्यपि कि शाबर मंत्रों को लेकर अंधविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच एक बड़ा विरोधाभास

देखने को मिलता है क्योंकि जहाँ लोकमानस में इन्हें अत्यधिक प्रभावशाली तथा सिद्ध माना जाता है वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनकी प्रमाणिकता पर संदेह किया जाता है (Urban, 2011)। आधुनिक चिकित्सा और विज्ञान के अनुसार मंत्रों का प्रभाव मनोवैज्ञानिक हो सकता है जिसे प्लेसीबो प्रभाव कहा जाता है। अर्थात व्यक्ति यदि यह मान ले कि मंत्र उसे ठीक कर देगा तो उसका आत्मविश्वास एवं मानसिक स्थिति इतनी मजबूत हो जाती है कि वह स्वयं को ठीक अनुभव करने लगता है (White, 2009)। वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह कहा जाता है कि शाबर मंत्रों में प्रयुक्त ध्वनि तरंगें और उच्चारण शरीर तथा मन पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं किन्तु इनके किसी अदृश्य शक्ति से जुड़ाव के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं (Banerjee, 2018)। शाबर मंत्रों के वैज्ञानिक मूल्यांकन के बावजूद भी समाज में इनकी लोकप्रियता और स्वीकार्यता को नकारा नहीं जा सकता। भारत जैसे देश में जहाँ आध्यात्मिकता-धार्मिकता का गहरा प्रभाव है वहाँ शाबर मंत्रों की उपयोगिता केवल व्यक्तिगत विश्वासों तक सीमित नहीं है अपितु यह एक व्यापक सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा बन चुके हैं। इनकी लोकमान्यता, धार्मिक महत्व तथा समाज के विभिन्न वर्गों में स्वीकृति यह दर्शाती है कि भारतीय समाज में आध्यात्मिक-तांत्रिक धारणाएँ अभी भी कितनी अधिक प्रभावी हैं।

आधुनिक संदर्भ में शाबर मंत्र

डिजिटल युग में जहां विज्ञान एवं तकनीक ने असाधारण प्रगति की है वहीं तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, टैरो कार्ड रीडिंग, अंक ज्योतिष तथा अन्य पारंपरिक आध्यात्मिक प्रथाओं की लोकप्रियता भी बढ़ी है। इंटरनेट, सोशल मीडिया एवं एनी डिजिटल प्लेटफॉर्म ने शाबर मंत्रों को एक नई पहचान दी है जिससे इनकी पहुँच व्यापक जनसमूह तक हो गई है । आधुनिक समाज में लोग अब तंत्र-मंत्र को केवल पारंपरिक धार्मिक गूढ़ विद्या तक सीमित नहीं मानते अपितु इसे मानसिक-आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के साधन के रूप में देखते हैं। विशेष रूप से भारत में जहां आध्यात्मिकता और धर्म का गहरा प्रभाव है, शाबर मंत्रों की लोकप्रियता अभी भी बनी हुई है तथा डिजिटल माध्यमों ने इसे अब और अधिक सुलभ बना दिया है । डिजिटल युग तथा तंत्र-मंत्र की लोकप्रियता की बात करें तो इंटरनेट पर शाबर मंत्रों से संबंधित हजारों वेबसाइटें, यूट्यूब चैनल तथा सोशल मीडिया पेज उपलब्ध हैं। इन प्लेटफार्मों पर लोग शाबर मंत्रों की शक्तियों, विधियों तथा प्रभावों के बारे में जानकारी साझा करते हैं। कई लोग इन्हें चमत्कारी उपाय मानते हैं और इनकी सहायता से स्वास्थ्य, धन, प्रेम और सुरक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान खोजने की कोशिश करते हैं (Banerjee, 2018)। विशेष रूप से यूट्यूब तथा व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर तांत्रिक साधकों, गुरुजनों एवं तंत्र विशेषज्ञों के वीडियो व्यापक रूप से देखे तथा साझा किए जाते हैं। इन डिजिटल माध्यमों ने शाबर मंत्रों को प्रचलित करने में अहम भूमिका निभाई है जिससे पहले जो ज्ञान केवल गुरु-शिष्य परंपरा तक सीमित था वह अब सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो गया है। हालांकि अब यह भी देखने को मिल रहा है कि कई लोग अंधविश्वास फैलाने के लिए इन मंत्रों का उपयोग कर रहे हैं जिससे समाज में भ्रम तथा भ्रामक मान्यताओं का प्रसार हो रहा है जिसमें भी कई कथावाचकों, मंदिरों के पुजारियों एवं स्वघोषित सिद्ध व्यक्तियों की भूमिका प्रमुख है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन समाज में शाबर मंत्रों के प्रति दृष्टिकोण विविध और बहुआयामी है। एक ओर जहाँ आध्यात्मिकता और तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले लोग इसे पारंपरिक ज्ञान तथा शक्ति का स्रोत मानते हैं तो दूसरी ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले लोग इसे केवल मानसिक प्रभाव या प्लेसीबो प्रभाव से जोड़ते हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षित वर्ग के बीच शाबर मंत्रों को लेकर मिश्रित प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती हैं जहाँ कुछ लोग इन्हें मनोवैज्ञानिक एवं आत्म-रक्षा का एक साधन मानते हैं जबकि अन्य इन्हें मात्र अंधविश्वास का प्रतीक समझते हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से आदिवासी तथा पारंपरिक समुदायों में शाबर मंत्रों की मान्यता अब भी बनी हुई है । तांत्रिक साधकों एवं ओझा-गुनी पर अब भी भरोसा किया जाता है और लोग अपनी बीमारियों के इलाज, बुरी नजर से बचाव तथा पारिवारिक समस्याओं के समाधान हेतु शाबर मंत्रों का सहारा लेते हैं। शाबर मंत्रों के कानूनी एवं नैतिक पक्ष की चर्चा करें तो आधुनिक कानून व्यवस्था में अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र को लेकर कई सवाल खड़े हुए हैं। भारत में कई राज्यों ने तंत्र-मंत्र एवं जादू-टोने से जुड़े प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून बनाए हैं। उदाहरणार्थ महाराष्ट्र में 'महाराष्ट्र प्रिवेंशन एंड इराडिकेशन ऑफ ह्यूमन सैक्रिफाइस, अदर इनह्यूमन एंड अघोरी प्रैक्टिसेस अँड ब्लैक मैजिक एक्ट, 2013' नामक कानून लागू किया गया जो तांत्रिक गतिविधियों के माध्यम से लोगों को धोखा देने तथा उनको आर्थिक शोषण से बचाने हेतु बनाया गया था (Banerjee, 2018)। इस प्रकार के कानून अन्य राज्यों में भी लागू किए गए हैं ताकि अंधविश्वास और जादू-टोना करने वालों पर नियंत्रण रखा जा सके। हालांकि इन कानूनों का विरोध भी किया जाता है, विशेषतः तांत्रिक परंपराओं से जुड़े लोग इसे धार्मिक स्वतंत्रता पर हमला मानते हैं । नैतिक रूप से भी शाबर मंत्रों का उपयोग एक विवादास्पद विषय बना हुआ है क्योंकि कुछ लोग इसे मानसिक शांति और आत्म-रक्षा का साधन मानते हैं वहीं अन्य इसे अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी का रूप मानते हैं। धार्मिक पुनरुत्थान तथा व्यावसायिक पहलू भी आधुनिक संदर्भ में शाबर मंत्रों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। वैश्वीकरण-आध्यात्मिक पुनर्जागरण के इस दौर में तंत्र-मंत्र और योग-साधना के प्रति रुचि एक बार फिर से बढ़ी है साथ ही कई कई आध्यात्मिक गुरु एवं संगठन शाबर मंत्रों को अपनी शिक्षाओं का हिस्सा बना रहे हैं और इनके प्रभाव को लेकर प्रचार कर रहे हैं (Mallinson, 2019)। यह देखा गया है कि शाबर मंत्रों का उपयोग अब केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है अपितु यह एक व्यावसायिक पहलू भी बन चुका है। इस बीच कई तथाकथित तांत्रिक और गुरु शाबर मंत्रों के माध्यम से लोगों को आकर्षित कर रहे हैं तथा उनसे आर्थिक लाभ कमा रहे हैं। ऑनलाइन कंसल्टेशन, मंत्र सिद्धि पाठ और तांत्रिक अनुष्ठान जैसी सेवाएँ अब एक व्यवसाय बन चुकी हैं जिससे आध्यात्मिकता और व्यावसायिकता के बीच की रेखा धुंधली हो गई है (White, 2009)। अंततः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक संदर्भ में शाबर मंत्रों की स्थिति अत्यधिक जटिल एवं बहुआयामी हुई है। एक ओर जहाँ डिजिटल प्लेटफॉर्म और सामाजिक परिवर्तन ने इन मंत्रों को नए सिरे से प्रासंगिक बना दिया है तो वहीं दूसरी ओर, वैज्ञानिक सोच, कानूनी नियंत्रण और नैतिक बहसों ने इन्हें विवादास्पद भी बना दिया है। वर्तमान भारतीय समाज में शाबर मंत्रों की लोकप्रियता और प्रभाव अभी भी बना हुआ है किन्तु इसका स्वरूप समय के साथ बदल रहा है। आधुनिक युग में लोग इन्हें केवल पारंपरिक-धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं अपितु मानसिक और सामाजिक प्रभावों के रूप में भी देखने लगे हैं। इस प्रकार शाबर मंत्रों की निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता भारतीय आध्यात्मिकता तथा लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू बनी हुई है।

निष्कर्ष

शाबर मंत्र भारतीय लोकपरंपरा, तांत्रिक परंपरा एवं धार्मिक विश्वासों का महत्वपूर्ण अंग रहे हैं जिनकी सबसे बड़ी विशेषता इनकी सरलता, सहजता एवं स्थानीय-प्रांतीय भाषाओं में सहज उपलब्धता है जिसके कारण ये ग्रामीण और शहरी समाज में समान रूप से स्वीकृत हैं। अध्ययन आधारित इस आलेख से यह स्पष्ट है कि शाबर मंत्र संकटमोचन, रोगनिवारण, सुरक्षा तथा जीवन की विविध समस्याओं के समाधान हेतु प्रयुक्त होते हैं। लोकमान्यता में इन्हें अत्यंत प्रभावशाली और सिद्ध माना जाता रहा है क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि इनकी शक्ति किसी जटिल अनुष्ठान से नहीं अपितु गुरु-शिष्य परंपरा तथा आंतरिक साधना से उत्पन्न होती है। शाबर मंत्र विशेष रूप से उन समुदायों में अधिक स्वीकृत पाए जाते हैं जो पारंपरिक ब्राह्मणीय अनुष्ठानों से वंचित थे और जिन्हें सरल तथा प्रभावी आध्यात्मिक विधियों की आवश्यकता थी। समाज में इनका उपयोग व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु किया जाता रहा है जिससे इनकी स्वीकार्यता एवं प्रभावशीलता को बल मिलता है। धार्मिक दृष्टि से देखें तो शाबर मंत्रों का संबंध देवी-देवताओं, लोकदेवताओं तथा गुरु परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज में आस्था और धार्मिक विश्वासों की महत्ता को देखते हुए यह समझना आवश्यक है कि शाबर मंत्रों की स्वीकार्यता न केवल आध्यात्मिकता तक सीमित है अपितु ये समाज की धार्मिक-सांस्कृतिक संरचना का भी अभिन्न अंग हैं। ऐतिहासिक रूप से, नाथ संप्रदाय, विशेषकर गुरु

गोरखनाथ एवं उनके अनुयायियों ने इन मंत्रों को प्रतिष्ठित किया जिसके कारण इनका व्यापक प्रसार हुआ। लोकमान्यता के अनुसार ये मंत्र सिद्ध साधुओं द्वारा रचित हैं जो जनसामान्य की समस्याओं के समाधान हेतु सुलभ-प्रभावी विधि प्रदान करते थे। इन मंत्रों में भैरव, हनुमान, दुर्गा, दत्तात्रेय, काली तथा अन्य लोकदेवताओं का आह्वान किया जाता है जिससे ये धार्मिक महत्ता प्राप्त कर लेते हैं। विशेष अवसरों, त्योहारों, अनुष्ठानों आदि में इनका प्रयोग देखा जाता है जिससे इनकी धार्मिक स्वीकृति और भी अधिक बढ़ जाती है। हालाँकि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शाबर मंत्रों की प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाए जाते रहे हैं। कई अध्ययनों में यह तर्क दिया गया है कि इन मंत्रों का प्रभाव मुख्यतः मनोवैज्ञानिक होता है, जिसे प्लेसीबो प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। वैज्ञानिक रूप से मंत्रोच्चारण की ध्वनि तरंगों का मन तथा शरीर पर सकारात्मक प्रभाव हो सकता है किन्तु इनके किसी अदृश्य शक्ति से जुड़े होने के कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं तथापि यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भारतीय समाज में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का इतना गहरा प्रभाव है कि शाबर मंत्रों की उपस्थिति केवल व्यक्तिगत विश्वासों तक सीमित नहीं है अपितु यह एक व्यापक सांस्कृतिक परंपरा बन चुकी है। डिजिटल युग में शाबर मंत्रों की लोकप्रियता फिर से बढ़ रही है। आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से यह मंत्र बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँच रहे हैं जिससे न केवल धार्मिक पुनरुत्थान की स्थिति उत्पन्न हो रही है अपितु इनके व्यावसायिक एवं कानूनी पहलू भी उभरकर सामने आ रहे हैं। कई व्यक्ति तथा संगठन इन मंत्रों को व्यावसायिक रूप से उपयोग कर रहे हैं जिससे इसकी प्रामाणिकता और नैतिकता पर भी प्रश्न उठने लगे हैं। भविष्य में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से शाबर मंत्रों के प्रभाव, उनके सांस्कृतिक-धार्मिक महत्व तथा वैज्ञानिक आधारों पर विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार पारंपरिक आध्यात्मिक प्रथाएँ आधुनिक संदर्भ में पुनः प्रासंगिक हो रही हैं तथा लोकमानस पर इनका प्रभाव किस प्रकार पड़ रहा है।

संदर्भ

1. बैनर्जी, एस. (2018). मिस्टिसिज्म एंड तंत्रा इन द हिंदू ट्रेडिशन्स। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. डेनियलू, ए. (1987). द मिथ्स एंड गॉड्स ऑफ इंडिया: द क्लासिक वर्क ऑन हिंदू पॉलीथीइज़्म फ्रॉम द प्रिंसटन बॉलींगेन सीरीज़। इनर ट्रेडिशन्स।
3. गुप्ता, एस. (2001). तांत्रिक ट्रेडिशन्स इन इंडिया। मोतीलाल बनारसीदास।
4. किंसले, डी. (1997). तांत्रिक विज़न्स ऑफ द डिवाइन फेमिनिन: द टेन महाविद्यास। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
5. मॉलिन्सन, जे. (2019). द नाथ्स: अ रिलीजियस ऑर्डर इन इंडिया। हार्पर कॉलिन्स।
6. अर्बन, एच. बी. (2011). तंत्र: सेक्स, सीक्रेसी, पॉलिटिक्स, एंड पावर इन द स्टडी ऑफ रिलीजियन। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
7. व्हाइट, डी. जी. (2009). सिनिस्टर योगीज। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
8. खण्डेलवाल, श्री एस० एन० (2023)। शाबरमन्त्रसागर। चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
9. ब्रूक्स, डी. आर. (1990). द सीक्रेट ऑफ़ द थ्री सिटीज़: एन इंट्रोडक्शन टू हिंदू शाक्त तंत्रिज़्म। यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
10. फ्लड, जी. (2006). द तांत्रिक बॉडी: द सीक्रेट ट्रेडिशन ऑफ़ हिंदू रिलीजियन। आई.बी. टॉरिस।
11. पाडू, ए. (2017). द हिंदू तांत्रिक वर्ल्ड: एन ओवरव्यू। यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
12. सैंडरसन, ए. (2009). द शैव एज: द राइज़ एंड डॉमिनेंस ऑफ़ शैविज़्म ड्यूरिंग द अर्ली मीडीवल पीरियड। इन जेनेसिस एंड डेवलपमेंट ऑफ़ तंत्रिज़्म (पृष्ठ 41–349)। इंस्टिट्यूट ऑफ़ एशियन स्टडीज़।
13. वालिस, सी. (2012). तंत्र इल्यूमिनेटेड: द फ़िलॉसफ़ी, हिस्ट्री, एंड प्रैक्टिस ऑफ़ अ टाइमलेस ट्रेडिशन। मत्तमयूरा प्रेस।